Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्वामी विवेकानन्द के अध्यात्मिक चिन्तन का अनुशीलन

पूजा सिंह
शोधार्थिनी, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान
डॉ. महेन्द्र सिंह
शोधनिर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन "स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक चिन्तन का अनुशीलन" के माध्यम से उनके व्यापक आध्यात्मिक दर्शन, मानवीय दृष्टिकोण तथा सामाजिक चेतना का विश्लेषण करता है। स्वामी विवेकानन्द भारतीय आध्यात्मिक परम्परा के ऐसे प्रमुख विचारक थे, जिन्होंने वेदान्त के मूल सिद्धान्तों को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप व्याख्यायित किया। उनके चिन्तन का आधार अद्वैत वेदान्त, आत्मा की सार्वभौमिकता, मानव की अन्तर्निहित दिव्यता तथा आत्म–साक्षात्कार की अवधारणा है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में अनन्त शक्ति और सम्भावनाएँ विद्यमान हैं तथा आध्यात्मिक उन्नति का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति में निहित दिव्य चेतना को जागृत करना है। विवेकानन्द ने ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और राजयोग को आत्मविकास तथा मोक्ष की प्राप्ति के प्रभावी साधनों के रूप में स्वीकार किया। उनका आध्यात्मिक चिन्तन केवल व्यक्तिगत मुक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि मानव–सेवा, करुणा, त्याग, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी आध्यात्मिक जीवन का अनिवार्य अंग मानता था। उन्होंने धर्म को संकीर्ण सम्प्रदायगत सीमाओं से मुक्त करते हुए सार्वभौमिक मानवतावाद और धार्मिक समन्वय की स्थापना पर बल दिया। उनका दर्शन आत्मविश्वास, निर्भीकता, चरित्र–निर्माण और राष्ट्रोत्थान की प्रेरणा प्रदान करता है। इस अध्ययन में उनके प्रमुख आध्यात्मिक विचारों, वेदान्त–दृष्टि, धर्म सम्बन्धी अवधारणा, मानव–सेवा के सिद्धान्त तथा समकालीन प्रासंगिकता का आलोचनात्मक अनुशीलन किया गया है।

कीवर्ड्स: स्वामी विवेकानन्द, आध्यात्मिक चिन्तन, वेदान्त दर्शन, मानवतावाद, आत्म–साक्षात्कार

भूमिका

स्माज के उत्थान के लिए शिक्षा विचारकों ने सामाजिक चिन्तन एकता, समानता एवं भाई–चारे के न्याय पर बल केन्द्रित किया था। उनका आर्थिक चिन्तन, धन के विकेन्द्रीकरण, पूँजी एवं श्रम के समान विभाजन तथा पूँजीवाद के स्थान पर मानवतावाद के प्रति उन्मुख, राजनैतिक चिन्तन, सत्ता के विकेन्द्रीकरण, सर्वोत्तम शक्तियों को जनता में निहित करने, जनप्रतिनिधियों में जन सेवा का भाव होने तथा राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने वाला तथा उनका अध्यात्मिक चिन्तन सभी को शिक्षित, संस्कारित एवं संगठित बनाने पर आधारित था। उनके इस चिन्तन का व्यापक प्रभाव भारतीय जन मानस के साथ–साथ तत्कालीन प्रबुद्ध राजनेताओं एवं शिक्षाविदों एवं अर्थशास्त्रियों पर पड़ा। स्वामी विवेकानन्द का

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

जीवन लक्ष्य भारत को अखण्ड, अतुल्य और राजनैतिक दृष्टि से मजबूत, सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध तथा आर्थिक दृष्टि से विकसित देशों की श्रेणी में लाने का था। वहीं स्वामी विवेकानन्द एक महान राष्ट्रवादी चिन्तक शिक्षा मनीषी, मानवतावादी विचारक, कर्मयोगी और भारतीय एकता एवं अखण्डता के पोषक थे। उनके अन्दर भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं जीवन–दर्शन का आदिम व्यवस्थित स्वरूप विामान था उन्होंने इसी के आधार पर वर्तमान व्यवस्थाओं को तदनुरूप तथा व्यावहारिकतापरक रूप में व्यवस्थित किये जाने का पक्ष लिया। विवेकानन्द जी का मानना था कि राष्ट्र की प्रगति एवं सर्वतोन्मुखी विकास समाज के समृद्धिशाली विकास एवं सामाजिक एकीकरण एवं भाईचारे से ही सम्भव है। समाज का सर्वांगीण विकास शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। इसलिए समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार को सक्षम सुसंस्कृत एवं समृद्धिशाली बनाने हेतु पुरुषों के समान महिलाओं को भी शिक्षित किये जाने का पक्ष स्वामी विवेकानन्द द्वारा लिया गया। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति, परिवार समाज तथा राष्ट्रीय प्रगति का सीपानीकृत ढाँचा विकसित करने तथा शिक्षा द्वारा समाज के पिछड़े, वंचित, दलित, शोषित एक निर्धन वर्ग वा उत्थान व उनके शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करने का पक्ष स सामी विवेकानन्द ने लिया। शिक्षा के स्वरूप को उन्होंने किताबी ज्ञान तक सीमित न मानकर आनुभविक एवं जीवन कल्याण के मानदण्ड पर केन्द्रित माना। उनका स्पष्ट मानना था कि शिक्षा की संरचना एवं उसका ढाँचागत विकास भारत की सस्कृति एवं अस्मिता के अनुरूप होना चाहिए। इसमें वैयक्तिक गुणों के साथ–साथ राष्ट्रीयता का भाव विकसित करने की क्षमता होनी चाहिए। शिक्षा की तत्कालीन शिक्षा प्रणाली मैकाले की बाबूगीरी की शिक्षा, अंग्रेजी कल्चर का विकास तथा राष्ट्रीय मूल्यों की अवहेलना करने वाली थी, इसलिए विवेकानन्द जी ने इसमें आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस परिवर्तन से विकृति की ओर बढ़ रही, सामाजिक व्यवस्था को विकास के साथ निर्माणात्मक संरचना की और अग्रसर करने हेतु शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर अपने अभिमत व्यक्त किए। उन्होंने शिक्षा के औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरीपचारिक माध्यमों से समाज में उन्नति गतिशीलता एवं परिवर्तन के साथ–साथ पुरुषार्थ, संस्कार एवं मूल्यपरक व्यवस्था स्थापित करने को महत्व प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द ने किसी व्यवस्थित अध्यात्मिक व्यवस्था का स्वरूप प्रस्तुत नहीं किया किन्तु शिक्षा के सभी आयामों पर अपना व्यवस्थित चिन्तन अवश्य प्रदान किया। उनको अध्यात्मिक विचार शिक्षा के सम्प्रत्यय से लेकर शिक्षा के सभी पक्षों पर गम्भीरता से व्यक्त किये गये है। स्वामी विवेकानन्द के अध्यात्मिक विचारों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यन्त सार्थक एवं उपयोगी माना जा सकता है। के अध्यात्मिक चिन्तन को नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए मार्गदर्शक एवं उपयोगी माना गया है। उनके चिन्तन के कई बिन्दुओं को नयी शिक्षा नीति–2020 में शामिल किया गया है। स्वामी विवेकानन्द की अध्यात्मिक विचारधारा वर्तमान शिक्षा में निम्नलिखित रूप में उपयोगी है। स्वामी विवेकानन्द जी के नवक्रान्तिकारी और प्रगतिशील विचारों का प्रभाव समूचे समाज और राष्ट्र पर पड़ा है। स्वामी जी जिस प्रकार सन्यासी होते हुए भी अपने देश, समाज और जन–कल्याण के उत्थान के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे तथा उन्होंने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से नवयुवकों का भी आह्वान कर उनमें साहस, निडरता, शौर्य, वीरता, भरने का काम किया है। स्वामी जी का यह विश्वास था कि नवुयवक ही समाज की जीर्ण–शीर्ण और चरमराती व्यवस्था का नवनिर्माण कर सकते है। स्वामी जी के विचारों के

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

समर्थन में पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी कहा था कि– मैं नहीं जानता हमारी युवा पीढ़ी में कितने लोग स्वामी विवेकानन्द के भाशणों और लेखों को पढ़ते हैं पर मेरे विचार में यदि वर्तमान पीढ़ी के लोग स्वामी विवेकानन्द के भाशणों और लेखों को पढ़े तो उन्हें बहुत बड़ा लाभ होगा और वे बहुत कुछ सीख पायेंगे। यदि तुम स्वामी विवेकानन्द के लेखों और भाशणों को पढ़ो तो तुम्हें यह आश्चर्यकारक बात दिखायी देगी की कभी वे पुराने नहीं प्रतीत होते।

वर्तमान समय में भारत के समक्ष अनेक प्रकार की समस्यायें जिस तरह बढ़ रही है और इन समस्याओं ने उग्र रूप भी धारण कर लिया है। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शून्य का पर्दापण हो चुका है। इतना ही नहीं आज जिस तरह जनमानस, समाज में व्याप्त समस्याओं, सामाजिक कुठाराघातों और संकट युक्त वेगवती प्रचण्ड धाराओं के मध्य भयाक्रान्त, हतप्रभ एवं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर जड़वत होकर दिशाहीन हो चुका है कि वह किस राह पर आगे बढ़े और इतना ही नहीं राजनीति भी कलुशित स्वार्थी, भ्रम और दिशाहीनता की ओर लगातार बढ़ती जा रही है ऐसे में भारतीय जनमानस ऐसी विपरीत परिस्थिति में भयावह चक्रवात में उलझता ही जा रहा है। इस दशा में देश के अस्थिर हालात एवं विधि–विधानों के उल्लंघनकारी संस्कारों के प्रवेष से यहाँ की लोकतान्त्रिक व्यवस्था भी छिन्न–भिन्न हो गयी है। इस जनतन्त्र बनाम भ्रष्टतन्त्र सम्पूर्ण भारतीय जनमानस पीड़ित, असहाय और हताश सा होता जा रहा है। स्वामी विवेकानंद जी के विचार ऐसी दशा में आज भी भारतीय समाज में व्याप्त इन समस्याओं के निराकरण में प्रासंगिक है। इस प्रकार यदि स्वामी जी के नव चेतनामयी विचारों को समझा जाय और उनकी शिक्षाओं को आत्मसात किया जाय, तो निष्चय ही हमारा समाज एक आदर्श एवं श्रेष्ठ समाज का प्रतिरूप धारण कर सकने में सफल हो सकेगा। वर्तमान समय में स्वामी जी की शिक्षाएं किसी एक क्षेत्र के लिए न होकर समाज के सभी पक्षों से सम्बन्धित होकर दिशाबोधित करने में सक्षम हैं। स्वामी जी की दृष्टि समग्र एवं समन्वयक होने के कारण न सिर्फ समाज के तथाकथित निम्न वर्ग के कल्याण के लिए थी, वरन् तत्कालीन समाज में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ और उच्च घोषित करने वाले कतिपय दिग्भ्रमित वर्गों के कल्याण के लिए भी लाभदायक रही है। स्वामी जी के उपदेशों से भारतीय समाज में समरसता की प्रतिस्थापना करने में सहायता प्राप्त होती है। जिससे दिशाहीन समाज को एक नयी दिशा प्रदान करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। स्वामी जी का विचार है कि– हर एक अभिजात वर्ग का पुनीत कार्य है कि वह अपने कुलीन तन्त्र की कब्र वह आप ही खोदे और जितना शीघ्र इसे कर सके उतना ही अच्छा है क्योंकि जितना ही देर वह करेगा, उतनी ही वह सड़ेगी और उसकी मृत्यु भी उतना ही भयंकर होगी। अतः भारतीय समाज की उच्च जातियों का कर्तव्य है कि भारत की दूसरी सब पिछड़ी जातियों के उद्धार की कामना के साथ कार्य करे। जैसा कि स्वामी जी ने कहा है कि– **"आत्मवत् सर्व भूतेषू"** अर्थात् सभी प्राणियों को अपनी ही तरफ देखो। उठो! और अपना पौरूषेय प्रकट करो, अपना ब्राह्मणत्व दीप्त करो, प्रभु भाव से नहीं अन्धविश्वास और पूर्व–पश्चिम के प्रपंचों के सहारे विकृत घातक अहंभाव से नहीं–बल्कि सेवक की भावना के साथ, दूसरों को ऊपर उठाकर आज भारत माता अपनी उन्नति के लिए श्रेष्ठ संतानों की बलि चाहती है। संसार के वीरों और सर्वश्रेष्ठों को **'बहुजन हिताय बहुजनसुखाय'** के लिए अपना बलिदान करना होगा। असीम दया और प्रेम से परिपूर्ण सैकड़ों बुद्धों की आवष्यकता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हे! भारत के वीरों, उठो! उठो! संसार दुःख से जल रहा है। महामोह के ग्रह से त्रस्त लोगों की ओर दृष्टिपात करो, उनके हृदय भेदक, करूणापूर्ण अंतर्नाद को सुनो। हे वीरों! वृद्धों को पाापमुक्त करने के लिए, दरिद्रों के कष्टों को कम करने के लिए तथा अज्ञानजनों के अन्दर का असीम अन्धकार दूर करने के लिए आगे बढ़ो। तुम काम में लग जाओ। प्रेम ही मैदान जीतेगा। क्या तुम अपने भाई, मनुष्य जाति से प्यार करते हो? ईश्वर को कहाँ ढूँढ़ने चले हो– ये सब गरीब, दुःखी, दुर्बल मनुष्य क्या ईश्वर नहीं है। इन्हीं की पूजा पहले क्यों नहीं करते? गंगा तट पर कुआँ खोदने क्यों जाते हो? प्रेम की असाध्यसाधिनी शक्ति पर विश्वास करो। ईश्वर पूजा के भाव से सेवा करो। दरिद्र व्यक्तियों में हमको भगवान दिखना चाहिए, अपनी ही मुक्ति के लिए उनके निकट जाकर हमें उनकी पूजा करनी चाहिए। अनेक दुःखी और कंगाल प्राणी हमारी मुक्ति के माध्यम है, ताकि हम रोगी, पागल, कोढ़ी, पापी आदि स्वरूपों के विचरते हुए प्रभू की सेवा करके अपना उद्धार करें। जब तुम सुख की कामना समाज के लिए त्याग सकोगे तब तुम भगवान बुद्ध बन जाओगे, तब तुम मुक्त हो जाओगे। अतः उठो जागो, स्वयं जागकर और को जगाओ। अपने नर जन्म को सफल करो। **''उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।''** स्वामी विवेकानन्द जी के द्वारा प्रस्तुत मानवीय मूल्यों के महत्व की व्याख्या करते हुए 1963 में **तत्कालीन राश्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृश्णन** ने कहा था कि– इस समय हम लोग अपने देश के इतिहास में नहीं वरन् विश्व इतिहास में एक निर्णायक अवस्था में हैं तथा बहुत से लोगों का विचार है कि वे एक तलहीन गड्ढे के किनारे हैं। इसलिए मूल्यहीनता की स्थिति आ गयी है और रहन–सहन के स्तर गिरते जा रहे हैं तथा लोगों में भयाक्रान्त की स्थिति का विस्तार हो रहा है जिसे सोचकर निराशा तथा कुण्ठा के कारण उन्माद ग्रस्त हो रहे हैं। आज हमारे समक्ष इसके कुछ तो कारण हैं क्योंकि मनुष्यों का आत्मा के प्रति विश्वास का अभाव जिसके कारण यह मानव स्वभाव के लिए लज्जास्पद है। इस संसार में जो बदलाव आये हैं, यह मनुष्य का ही स्वभाव है। स्वामी विवेकानन्द ने जब हम लोगों को जो उपदेश सन्देश और विचार दिया है, उसे हमें स्वयं में आध्यात्मिक साधनों द्वारा आत्मसात कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। मनुष्य के पास कभी न समाप्त होने वाले आध्यात्मिक साधन हैं जिसमें उसकी आत्मा सर्वोपरि है तथा इस सांर में कोई भी पदार्थ अनिवार्य नहीं है। आत्मा के सिवा सब कुछ नाशवान है और हमें ही सभी खतरों और अयोग्यताओं का सामना करना है। हमें केवल आशा नहीं छोड़ना है क्योंकि यही आशा और आत्मविश्वास हमें संकट के समय, धैर्य, विपत्ति के समय, आशा तथा निराशा के समय साहस प्रदान करेगा। क्योंकि स्वामी जी ने कहा भी है कि– बाह्य आकर्शण के पीछे मत दौड़ो, अन्तःकरण में दैवीय इच्छा है। इस सृश्टि में एक उद्देश्य है, तुम्हें इस उद्देष्य के साथ मिलकर चलना होगा।

इस प्रकार सारांशतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में स्वामी विवेकानन्द जी के विचार समाज के लिए एक आदर्श पथप्रदर्शक और दिशाबोधक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकने में पूर्णतः सक्षम है। स्वामी जी के विचारों को समझकर जहाँ एक तरफ समाज में व्याप्त कुरीतियों और अन्धविश्वासों को निर्मूल किया जा सकता है वही स्वामी जी के नवक्रान्तिकारी विचारों के अनुकरण से समाज को एक नयी दिशा से अवबोधित भी किया जा सकता है। अतः स्वामी जी के विचार आत्मसात करने पर देश का भविष्य अत्यन्त उज्जवल होगा तथा देश में जो अत्याचार, भ्रष्टाचार एवं पक्षपात इत्यादि के भाव, दीमक की तरह देश की नीवों को खोखला कर रहे हैं उनको निर्मूल किया जा सकेगा। इतना

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

ही नहीं स्वामी जी द्वारा निर्दिश्ट एकतावादी साम्य विचारधारा निश्चय ही एक सुदृढ़ समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकेगा तथा नव्य वेदान्तिक और आध्यात्मिक विचारधारा से ओत–प्रोत आर्थिक सम्पन्न सुशिक्षित एक नये भारत के निर्माण का स्वामी जी के सपने को साकार किया जा सकेगा।

स्वामी विवेकानन्द अध्यात्मिक चिन्तन–

स्वामी विवेकानन्द का अध्यात्मिक चिन्तन गॉधी जी की बुनियादी शिक्षा से प्रभावित था। गॉधी जी का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास है। इससे व्यक्ति में दक्षता आती है और उसके हुनर का विकास होता है। स्वामी विवेकानन्द भी अपने अध्यात्मिक चिन्तन में मनुष्य के जीवन के सभी पक्षों में सक्रियता लाना चाहते हैं। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों के विकास में सहायक होनी चाहिए। शिक्षा में ऐसी शक्ति होनी चाहिए जो समाज में बदलाव ला सके। शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसमें धर्म, जाति, लिंग व वर्ग विभेद से परे एक समदर्शी, समतामूलक एवं समन्वयकारी समाज के निर्माण का गुण विद्यमान है। स्वामी विवेकानन्द ने तत्कालीन शिक्षा के सम्बन्ध में कहा कि ज्ञान का हर विस्तार हमें अज्ञान के समापन की ओर ले जा रहा है। एक परमाणु भौतिक विज्ञानी बहुत सम्भव है, नक्षत्र विज्ञान में अज्ञानी ही रहे विशेषज्ञ होना तो दूर। इससे बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है। आधुनिक सभ्यता के पुनर्जीवन व नये मानव के निर्माण के लिए आवश्यक है कि आदमी छदम विरोधाभासों से मुक्ति पाये और नयी सभ्यता में मनुष्य के आन्तरिक और बाहय व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो। अर्थात् मनुष्य का केवल भौतिक विकास न हो जो वर्तमान में हो रहा है और न केवल आध्यात्मिक विकास ही हो जैसा प्राचीन भारतीय सभ्यता में होता था। इसलिए इन दोनों सभ्यताओं में समन्वय स्थापित करने वाली शिक्षा प्रणाली का विकास होना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा में शारीरिक दक्षता के साथ–साथ नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों के विकास की क्षमता होनी चाहिए। शिक्षा द्वारा समाज में एक नयी चेतना और संस्कृति को प्रतिस्थापित करना का प्रमुख लक्ष्य था। शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जिसमें देश की एकता, अखण्डता के साथ–साथ समानता, उदारता और विश्व बन्धुत्य की भावना का विकास करने की क्षमता हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को उद्यमी, स्वावलम्बी तथा सक्षम बनाने की क्षमता हो। स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिक्षा और जागरूकता के द्वारा एक ऐसे समाज की संरचना करना चाहते थे जो समानता के न्याय पर विकसित हो तथा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति और व्यक्तित्व विकास का पूर्ण अवसर उपलब्ध हो सके। का मानना था कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को चरित्रवान, क्षमतावान और आत्म निर्भर बनाया जा सकता है। व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि गुणों से श्रेष्ठ बनता है और श्रेष्ठ गुणों का विकास सच्ची शिक्षा से ही सम्भव हो सकती है। शिक्षा से जीवन में गतिशीलता, अभिव्यक्ति में सरलता और आचरण में पवित्रता आती है ऐसा का विचार था कि धार्मिकता आर धर्मान्धता के अन्तर की समझ शिक्षा द्वारा ही सम्भव माना है। उनके अनुसार शिक्षा यह है जो संस्कार पैदा करे, संस्कार पैदा करे, स्वावलम्बन प्रदान करे और समभाव विकसित करे। स्वामी विवेकानन्द का यह मानना था कि एक शिक्षित व्यक्ति एक गैर पढ़े लिखे व्यक्ति की अपेक्षा अधिक सरलता से परिस्थितियों का आकलन व नियन्त्रण कर लेता है तकनीकी पक्षों की संरलता से समझ लेता है तथा कम श्रम में अधिक उत्पादन की दक्षता रखता है। स्वामी विवेकानन्द शिक्षा को आर्थिक दृष्टि से एक निवेश के रूप में मानते है,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उनके अनुसार शिक्षा प्राप्त करने वाला उत्पाद शिक्षा प्राप्त न करने वाले से शिक्षा पर किये गये व्यय से अधिक लाभांश प्रदान करता है क्योंकि इसकी गुणवत्ता, कार्यशीलता और उत्पादकता काफी अधिक होती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली लोहिया के इसी दृष्टिकोण को महत्व प्रदान करती है। वहीं स्वामी जी मानवतावादी चिन्तक एवं राजनेता के साथ–साथ समाज में राष्ट्रीय संचेतना के प्रचारक भी थे। ये शिक्षा को राष्ट्रीय प्रगति और नय निर्माण का साधन मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा राष्ट्र की प्रगति की सूचक मानी जाती है यह समाज की आवश्यकताओं और राष्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुरूप नागरिकों का निर्माण करती है। शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति भारतीय संविधान में निहित अधिकारी और मौलिक कर्तव्यों का समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति में राष्ट्रीय सांस्कृतिक मूल्यों का संज्ञान, राष्ट्रवाद की भावना एवं राष्ट्रीय प्रगति हेतु मिलकर कार्य करने की भावना का विकास करती है। राजनीति में शिक्षित लोगों की भूमिका को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है। इस प्रकार स्वामी विवकानन्द ने शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा वैयक्तिक विकास का प्रमुख साधन मानते है। शिक्षा को उन्होंने एक ऐसा अभिकरण माना जिससे ज्ञान सांत के साथ कार्य दक्षता का विकास होता है। स्वामी विवकानन्द समन्ययकारी अध्यात्मिक प्रक्रिया के पक्षधर रहे हैं जो व्यक्ति और समाज का परिमार्जन और परिवर्तन करने में सक्षम हो। उन्होंने शिक्षा को शारीरिक, मानसिक और नैतिक गुणों का विकास करने का प्रमुख कारक माना है तथा इसी आधार पर अपने एकात्म मानवतावाद की आधारभूत संकल्पना को फलीभूत करने की मंशा व्यक्त की है। स्वामी विवेकानन्द ने जहाँ शिक्षा को समाज का दर्पण माना वहीं ने इसे समाज का पोषण एवं समुन्नत बनाने का सर्वोत्तम साधन बताया। उनके अनुसार बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना प्रत्येक समाज के लिए आवश्यक एवं उपयोगी होता है, क्योकि जन्म के समय बालक केवल एक जैविक प्राणी होता है, जो शिक्षा एवं पारिवारिक संस्कारों के द्वारा वह सामाजिक प्राणी वो रूप में विकसित होता है।

स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि मनुष्य की मौलिक आवश्यकताएँ जैसे–जैसे कपड़ा और मकान की भाँति उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताएँ भी होती है। जिसमें उसके जीवन मूल्य संस्कार, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन आदि भी अत्यन्त आवश्यक होती है, जिनकी प्राप्ति शिक्षा एवं परिवार एवं समाज के अनौपचारिक माध्यमों से होती है। उनके अनुरूप मनुष्य होने के कारण भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना व्यक्ति का प्राथमिक दायित्व होता है किन्तु समाज के प्रति कर्तव्यों का पालन, सामाजिक मूल्यों के विकास एवं सामाजिक दायित्य के निर्वाह में सक्षम बनाना भी शिक्षा का ही दायित्व होता है। शिक्षा के द्वारा मानवीय गुणों एवं दक्षताओं या विकास या पक्ष लेते हैं। उनके अनुसार शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के वैयक्तिक गुणों, परिवार के पीढ़ीगत विशेषताओं तथा समाज की रीतियों, कार्य प्रणालियों, मान्यताओं एवं आदर्शों का संरक्षण, संवर्धन एवं हस्तान्तरण होता रहता है। यदि शिक्षा व्यवस्था नहीं हो तो समाज की ये सभी विशेषताएँ भी व्यवस्थित नहीं रह सकती है तथा समाज का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। सामाजिक व्यवस्था एवं उसकी प्रणाली शिक्षा के कारण ही गतिशील होकर आगे बढ़ती है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति अपने अध्ययन एवं अनुभव से प्राप्त ज्ञान को अपने आगे की पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है जिससे ज्ञान की यह यात्रा निरन्तर प्रवाहमान बनी रहती है। इस सतत् गतिमान प्रक्रिया से समाज की व्यवस्था आगे बढ़ती रहती है। यदि शिक्षा की यह अनवरत

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्रक्रिया हो तो सम्पूर्ण समाज व्यवस्था अस्तित्व विहीन एवं निष्क्रिय हो जायगी। स्वामी जी का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा और संस्कार से ही समाज या मूल्य एवं संस्कार बनत और सुदृढ हाता है।। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को भावी समाज के विकास का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम बताया। उनके अनुसार सत्य, अहिंसा, सदाचार एवं सद्–व्यवहार के लिए हमारे पूर्वजों ने विपन्न परिस्थितियों में भी निरन्तर स्वीकृति मानदण्डों को संरक्षित करने का कार्य किया तथा अपनी अखण्ड संस्कृति एवं अध्यात्म को जीवित रखा। यह अतुल्य सम्पत्ति आज भी हमारे लिए अद्भुत एवं अनुकरणीय है। सभी को इस धरोहर का अपनी भावी पीढ़ी को प्रदान करने का सतत प्रयास करते रहना चाहिए। यदि शिक्षा की यह अनवरत प्रक्रिया बाधित होती है, तो सम्पूर्ण समाज व्यवस्था अस्तित्व विहीन एवं निष्क्रिय हो जायेगी। स्वामी विवेकानन्द जी का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा और संस्कार से ही समाज के मूल्य एवं संस्कार बनते और सुदृढ़ होते हैं। स्वामी विवेकानन्द के इस चिन्तन को पं० मदनमोहन मालवीय ने भी शिक्षा को भावी समाज के विकास का सर्वोत्तम माध्यम बताया। उनके अनुसार सत्य, अहिंसा, सदाचार एवं सद्व्यवहार के लिए हमारे पूर्वजों ने विषम परिस्थितियों में भी निरन्तर इन मानदण्डों को सरक्षित एवं संवर्धित किया तथा अपनी अखण्ड संस्कृति एवं अध्यात्म को जीवित रखा यह अतुल्य सम्पत्ति आज भी हमारे लिए अद्भुत एवं अनुकरणीय है। सभी को इस धरोहर को अपनी भावी पीढी को प्रदान करने का सतत् प्रयास करते रहना चाहिए। यथा–नीतिशतक में भी कहा गया है–

माता शत्रु, पिता वैरी येन बालो न पठिता।
न शोभते सभा मध्ये, हंस मध्ये बलो यथा ।।

स्वामी विवेकानन्द ने दयाननद सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित उस चिन्तन को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना, जिसमें उन्होंने लिखा कि बच्चें को शिक्षा एवं संस्कार प्रदान करना माता–पिता, आचार्य एवं समाज का परमदायित्य होता है। इससे वह सांसारिक समस्याओं का निराकरण करते हुए संसार को एक नया आलोक प्रदान करता है। जिससे उसे परमानन्द की प्राप्ति होती है। स्वामी जी का विचार है कि सन्तानों को उत्तम विद्या शिक्षा गुण कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों को धारण कराना माता–पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, मणिक मोती, मूंगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान प्रदर्शित होता है, मनुष्य का आत्मा सुशोभित कभी नहीं हो सकती। जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता है सुन्दर शील स्वभाव युक्त सत्य भाषण आदि नियम पालन युक्त और जो अभिमान अपवित्रता से रहित अन्य मलीनता के नाशक सत्योपदेश विद्यमान से संसारी जनों के दुखों को दूर करने से सुशोभित वेदविहित कर्म से पराये उपकार करने में रहते हैं ये नर और नारी धन्य हैं। इसलिए सभी लड़की और लड़कों को शाला में भेज दें।

शोध सार–

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को समाज की प्रथम आवश्यकता माना है, क्योकि शिक्षा, किसी समाज के लिए व्यक्ति का एक ऋण की तरह है, जिसे चुकाना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। जब हम अगली पीढी के लिए शिक्षा की व्यवस्था करते हैं तो यह हमारा उन पर कोई उपकार नहीं बल्कि हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान, अनुभव एवं संस्कारों की नवीनतम आवश्यकताओं की अपेक्षा उपलब्धताओं के अनुरूप हस्तान्तरित करने की एक उपयोगी प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा समाज में भाईचारे, समानता एवं

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

मानवता का गुण विकसित किया जा सकता है तथा लोगों में परस्पर प्रेम, सदाचार एवं राष्ट्रीयता की भावना का किया जाना सम्भव है। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द और जी तत्कालीन समाज में प्रासांगिक थे और वर्तमान में भी हैं। स्वामी जी का अध्यात्मिक चिन्तन समग्रतावादी, मानवतावादी एवं राष्ट्रवादी विचारधारा का पोषक एवं समर्थन करता है। अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द जी के अध्यात्मिक चिन्तन की वर्तमान भारतीय परिदृश्य में विशेष ग्रहणीयता एवं उपादेयता है।

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल (2019) विश्व के सर्वश्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री , अगवाल पब्लिकेशन आगरा.
2. स्वामी विवेकानन्द (1995) शिक्षा, श्रीराम कृष्ण आश्रम, नागपुर प्रकाशन नागपुर.
3. ज्ञानप्रकाश (1948) कुछ स्मृतियाँ एवं विचार, ज्ञान मण्डल प्रकाशन वाराणसी.
4. डॉ० सम्पूर्णनन्द (1962) चरित्र चर्चा एवं जीवनदर्शन, नागरी प्रचारिणी सभा काशी
5. शर्मा रामनाथ (2010) स्वामी विवेकानन्द के विचार में राष्ट्र के विकास में सास्कृतिक राष्ट्रवाद की भूमिका, पी–एच0 डी0 शोध कार्य बी0एच0यू. वाराणसी.
6. पाण्डेय, रामशकल (2010) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, चतुर्थ संस्करण
7. स्वामी जीवन दर्शन, सूचना विभाग उ०प्र० सरकार लखनऊ. 2021.